बचत और निवेश का मोर्चा कैसे फतह करें महिलाएं?

हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही महिलाएं निवेश की दुनिया में भी पीछे नहीं हैं, लेकिन कुछ मिथ या पूर्वाग्रह अब भी ऐसे हैं, जिन्हें तोड़ने की ज़रूरत है। 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर फर्स्ट ग्लोबल की फाउंडर और फॉर्च्यून इंडिया की साल 2025 की 50 सबसे प्रभावशाली भारतीय महिलाओं की लिस्ट में शामिल रहीं देविना मेहरा और देश में म्यूचुअल फंड बिजनेस शुरू करने वाली पहली महिला और द वेल्थ कंपनी की फाउंडर मधु लुनावत ने दी राय। पेश हैं अखिलेश प्रताप सिंह से इन एक्सपर्ट्स की बातचीत के मुख्य अंश...

'लड़कियो, अपना पैसा अब खुद संभालो'

देविना मेहरा
फाउंडर एवं CMD, फर्स्ट ग्लोबल

पर्सनल से सवाल, सबके काम के जवाब

1 ऐसी आदत, जिस पर आपका सबसे ज्यादा जोर हो?
समय की वैल्यू का ध्यान रखना।

2 एक बात, जिसकी सलाह आप देती हैं, पर उस पर खुद अमल नहीं किया?
इनवेस्टमेंट जल्द शुरू करना चाहिए, लेकिन मैंने 21 की उम्र में काम शुरू किया और 3-4 साल तक निवेश नहीं किया था।

3 अगर किसी एक वित्तीय शब्दावली को हमेशा के लिए हटाना हो, किसे हटाएंगी?
बाय एंड फॉरगेट। कम से कम स्टॉक्स के मामले में तो यह बात ठीक नहीं है।

4 निवेश के बारे में सबसे बेतुकी सलाह, जो आपके सामने आई हो?
यंग है तो 100% इक्विटी में लगाएं और रिटायर होने पर 0% कर दें। दोनों ही गलत हैं। अब लाइफ एक्सपेक्टेंसी बढ़ गई है। 60 साल में रिटायर हो रहे हैं तो आगे के 20-30 साल के लिए बजट देखना है। ऐसे में जीरो पर्सेंट इक्विटी में नहीं हो सकते। यंग एज में 100% इक्विटी में भी नहीं होना चाहिए क्योंकि हो सकता है कि आप अच्छी नौकरी कर रहे हों, लेकिन अगर जॉब छूट जाए या आपको आगे पढ़ना हो या कुछ मेडिकल इमर्जेंसी आ गई, तो उसके लिए तुरंत पैसा चाहिए। इसलिए इक्विटी में भी कभी 100% नहीं होना चाहिए।

5 ऐसा लग्जरी खर्च, जिससे खुद को रोकना आपके लिए मुश्किल हो?
घूमना-फिरना, अच्छा खाना और किताबें।

Q महिलाओं के लिए फाइनैंशल फ्रीडम का क्या मतलब है?
एक बात है पैसे कमाना, दूसरी है उसे मैनेज करना। आज भी कमाई करने वाली अधिकतर महिलाएं अपना पैसा खुद मैनेज नहीं करतीं। इस बारे में निर्णय घर के पुरुष लेते हैं, चाहे पिता हों, भाई हों या हसबैंड हों। यह बात प्रफेशनली बहुत सीनियर महिलाओं में भी मैंने देखी है। पैसे कमाना ही काफी नहीं है। जब तक आप अपना पैसा खुद नहीं संभाल रहीं, तब तक वित्तीय रूप से स्वतंत्र नहीं हैं। काफी महिलाएं घर के बाहर काम नहीं करतीं। उनको न तो श्रेय मिलता है और न ही पैसे। कई महिलाओं को लगता है कि उन्हें पैसे संभालना नहीं आता। इसकी बड़ी वजह यह है कि अधिकतर परिवारों में पैसे की बातचीत बेटों के साथ जितनी होती है, बेटियों से उतनी चर्चा नहीं होती। बड़े बिजनेस परिवारों में भी ऐसा होता था। आज भी ऐसे कई दिग्गज परिवारों की बेटियों के नाम काफी लोगों को मालूम नहीं होंगे।

Q किस तरह की चुनौतियां आप देखती हैं?
पत्नी चाहे कामकाजी हो या केवल घर के काम संभालने वाली, पैसे के बारे में पति से पूछने और पैसा मैनेज करने में संकोच नहीं होना चाहिए। कई बार देखा गया है कि पत्नी विधवा हो गई और उसे पता ही नहीं कि सेविंग्स कहां हैं, निवेश कहां है। कई बार शादी नहीं चलती और पति कहता है कि सब कुछ मैंने कमाया है तो तुम्हें क्यों दूं? कई महिलाएं बच्चों की देखभाल की जरूरत या पति के दबाव में अपना करियर छोड़ देती हैं। लंबे समय की फाइनैंशल सुरक्षा के लिहाज से यह बहुत बड़ा असर डालने वाला फैसला होता है। बच्चों के लिए भी छोड़ रहे हैं तो देखिए कि यह जरूरत 5-7 साल की होती है, लेकिन इसके लिए 30 साल का करियर छोड़ दिया। इसे बिना सोचे-समझे नहीं करना चाहिए।

एक खास चीज है कि शेयरों में निवेश करने में कुछ मौकों पर नुकसान भी होता है। महिला के निवेश करने पर ऐसा हो जाए तो परिवार के लोग और वह खुद भी कहती है कि उसने बेवकूफी कर दी, लेकिन पुरुष के बारे में महिला ऐसा शायद ही कहती है। निवेश और रिटर्न के आंकड़े देखें तो पता चलता है कि महिलाओं के रिजल्ट बेहतर होते हैं। लेकिन आमतौर पर पुरुष इस बारे में ज्यादा कॉन्फिडेंट तरीके से बातें करते हैं। एक और अहम बात यह है कि उत्तराधिकार से लेकर जो भी कानूनी हक लंबे संघर्षों से मिले हैं, महिलाओं को उन्हें छोड़ना नहीं चाहिए। मेरा मेसेज यही है कि लड़कियों अपना पैसा खुद संभालो।

Q यंग वर्किंग महिलाओं को सेविंग्स और इनवेस्टमेंट के बारे में क्या सलाह है?
■ नौकरी लगते ही निवेश की शुरुआत करें। 60 साल की उम्र के लिए अगर किसी रकम का लक्ष्य बनाया है और उसे पाने के लिए 25 साल की उम्र के बजाय 30 साल में निवेश शुरू करेंगी, तो दोगुने से शुरुआत करनी पड़ सकती है। कई लोग कहते हैं कि अभी तो तनख्वाह इतनी कम है कि कोई बचत नहीं हो पाएगी। मेरी सलाह है कि जितना भी हो, बचत की शुरुआत कीजिए और जब भी इंक्रीमेंट या बोनस मिले, उसे सेविंग्स और इनवेस्टमेंट में लगाइए।

■ सिर्फ सेविंग्स से काम नहीं चलता। ठीक से निवेश करना होता है। महिलाओं के पोर्टफोलियो देखने से पता चलता है कि वे रिस्क लेने से बचती हैं। सारा पैसा या तो FD या PPF टाइप चीजों में होता है। अगर केवल बैंक में पैसा है और साल में 1 लाख रुपये की सेविंग्स हो रही है तो 30 साल में वह 75 लाख रुपये के करीब होगा। लेकिन अगर ऐसे प्रोडक्ट में लगाएं, जिसमें 9.5% के करीब कंपाउंडिंग मिले, तो 30 साल में यही पैसा लगभग 1.6 करोड़ रुपये तक हो सकता है। अगर 12-12.5% से कंपाउंडिंग हुई तो यह 3 करोड़ रुपये हो सकता है। इसी तरह केवल शेयरों या क्रिप्टो में भी पैसा नहीं लगाना चाहिए। सोच-समझकर असेट अलोकेशन करें और उसको बार-बार छेड़िए मत। यंग एज में ऐसी सलाह भी मिलती है कि पूरा पैसा इक्विटी में लगा दो। यह गलत सलाह है क्योंकि किसी को नहीं पता कि इक्विटी में 2-3 साल में क्या होगा। इसलिए शेयरों में वही पैसा लगाएं, जिसकी आपको 8-10 साल में जरूरत नहीं पड़ने वाली हो। यंग हैं तो 70% तक इक्विटी में निवेश कर सकती हैं।

■ अपने पोर्टफोलियो का रिव्यू कीजिए। शेयर, डेट, रियल एस्टेट, क्रिप्टो वगैरह में कहां कितना निवेश है, इसे समय-समय पर देखते रहें। ग्लोबल इनवेस्टमेंट भी करना चाहिए। लॉन्ग टर्म प्लानिंग के लिहाज से यह अच्छा है। मल्टी-बैगर या किसी मैजिक फॉर्मूले के पीछे मत भागिए। अपने लक्ष्यों के हिसाब से असेट एलोकेशन ठीक रखें। शेयर बाजार में निवेश मनोरंजन के लिए या वट्सऐप ग्रुप में चर्चा या पार्टी गॉसिप के लिए न करें, जैसा कि कई पुरुष करते हैं।

Q जो महिलाएं केवल घर संभाल रही हैं, उनके लिए आपकी क्या सलाह है?
■ अगर आप घर से बाहर काम नहीं कर रही हैं और पति कमा रहे हैं, तो भी कुछ पैसा आपके अकाउंट में आना चाहिए। यह बात शादी के पहले-दूसरे साल में तय हो जानी चाहिए। बाद में ऐसा करना जरा मुश्किल हो जाता है। शुरू में लग सकता है कि इसे बहस का मुद्दा क्यों बनाएं, लेकिन फाइनैंशल सिक्योरिटी के लिए यह जरूरी है।

■ दूसरी बात यह है कि थोड़ी-थोड़ी बचत जरूर किया करें। लेकिन किसी दोस्त-मित्र या रिश्तेदार की सलाह पर निवेश का फैसला न करें। हाउसवाइव्स को यह लग सकता है कि अगर समय है तो क्यों न फुल टाइम स्टॉक मार्केट में ट्रेड करें और पैसा बनाएं। ऐसी सलाह खतरनाक होती है। ट्रेनिंग कोर्स करके डे ट्रेडर बनने की सलाहें भी आती हैं। इनसे बचना जरूरी है। अच्छे फाइनैंशल एडवाइजर से सलाह लेना ठीक रहता है।

■ यह सलाह एक तरह से कामकाजी और हाउसवाइव्स, दोनों के लिए है। कई घरों में ऐसा होता है कि जो महीने का खर्च है, वह तो महिलाओं की तनख्वाह से चल रहा है और जो असेट बन रहे हैं, वे पुरुष के नाम पर बन रहे हैं। अगर आप विवाहित हैं, तो सभी असेट पति के साथ आपके नाम पर भी होने चाहिए, जॉइंट रूप से।

'कमाई बढ़ाने के लिए नई चीजें सीखें'

Q महिलाओं के लिए फाइनैंशल फ्रीडम आपकी नजर में?
किसी के बैंक अकाउंट में कितने पैसे हैं, फाइनैंशल फ्रीडम को केवल इस तरह नहीं देखा जाना चाहिए। वित्तीय आजादी तब होगी, जब आप किसी चीज 'नहीं' कह सकें। यह आपको शक्ति देती है कि आप किसी जॉब, रिश्ते या किसी ऐसी स्थिति से आसानी से निकल सकें, जो आपके अनुकूल न रह गई हो। कई बार रुपये-पैसे से जुड़ी बाधाएं रास्ते में आती हैं। ऐसे में फाइनैंशल फ्रीडम का मतलब उस आत्मविश्वास से भी है, जो आपको अपनी शर्तों पर अपनी जिंदगी तय करने की ताकत देती है। लंबे अरसे से हम सबको पैसे को मुश्किल दिनों में सहारा देने वाली चीज के रूप में बताया जाता रहा है। मैं इसे एक लॉन्च पैड की तरह देखती हूं। यह हमारी महत्वाकांक्षा का ईंधन है, अपनी विरासत बनाने और समाज में अपना असर छोड़ जाने का जरिया है। वित्तीय स्वतंत्रता लाखों-करोड़ों रुपये रखने के साथ इस बात का भी मामला है कि आपके पास कितने विकल्प हैं। असली वित्तीय स्वतंत्रता इसमें है कि अपना रास्ता खुद चुन पाने की क्षमता है या नहीं।

Q महिलाओं के बचत और निवेश के पैटर्न में किस तरह के बदलाव दिख रहे हैं?
बदलाव हो रहा है। हालांकि ऐसा नहीं है कि महिलाएं बिना सोचे-समझे या लापरवाही में रिस्क उठा रही हैं। महिलाएं अब जो करने लगी हैं, वह इसी बात का विस्तार है कि वे हमेशा ही लॉन्ग टर्म इनवेस्टर रही हैं। भारत में किसी भी महिला को आप देखिए। वह घर में निवेश करती है। अपने बच्चों की शिक्षा में निवेश करती है। वह सोने में निवेश करती है, लेकिन गहनों के रूप में नहीं, बल्कि लंबे समय के वैल्यू स्टोर के रूप में। ये सब लॉन्ग टर्म असेट्स ही तो हैं। महिलाओं का स्वभाव कभी भी स्पेक्युलेशन वाला नहीं रहा है। मार्केट में इधर-उधर दांव लगाने के बजाय यह सुरक्षा पर ध्यान देने का नजरिया है। यही हमारा DNA है।

असली बदलाव यह है कि महिलाएं लंबी अवधि के निवेश वाले इसी अनुशासित नजरिए के साथ अब फाइनैंशल मार्केट्स में आ रही हैं। पहले वे मुख्य रूप से केवल रियल एस्टेट और गोल्ड पर फोकस करती थीं, अब वे शेयरों, म्यूचुअल फंड्स और सिस्टेमैटिक इनवेस्टमेंट्स को भी अपना रही हैं। लेकिन इसमें भी खास बात है। ज्यादातर महिलाएं डे-ट्रेडिंग नहीं कर रही हैं। वे हॉट टिप्स के पीछे नहीं भाग रहीं। वे SIP कर रही हैं और 10, 15, 20 साल के लिए निवेश कर रही हैं। यह है आज की निवेशिका।

Q किस तरह की चुनौतियां हैं?
करीब 75% SIP बीच में ही रोक दिए जाते हैं और ऐसा इसलिए नहीं होता कि महिलाओं में अनुशासन नहीं है। ऐसा मुख्य रूप से शेयर बाजार में अचानक हुई हलचल, घबराहट और वित्तीय समझ कम होने के चलते होता है। महिलाएं स्वभाव से ही अनुशासित होती हैं। उन्हें केवल सही गाइडेंस और कॉन्फिडेंस की जरूरत है कि वे अपनी सोच पर भरोसा कर सकें।

अभी दिख रहा बदलाव तब और तेजी से बढ़ेगा, जब हम महिलाओं के सामने फटाफट मोटा रिटर्न कमाने के आइडिया बेचना बंद कर देंगे। इसके बजाय हमें उन बातों को महत्व देना होगा, जो करने में वे माहिर हैं। यानी एक उद्देश्य के साथ धीरज बनाए रखते हुए लंबी अवधि के लिए संपत्ति बनाने के रास्ते पर चलना। महिलाओं को यह नहीं सीखना है कि रिस्क कैसे लिया जाता है। उन्हें यह याद रखने की जरूरत है कि घर, शिक्षा और परिवार में निवेश करते वक्त उन्होंने हमेशा ही रिस्क लिया है। फाइनैंशल मार्केट्स में जरिया भले ही बदल गया हो, फिलॉसफी तो वही है।

Q कामकाजी महिलाएं सेविंग्स और इनवेस्टमेंट में किन 3 खास पहलुओं पर फोकस करें?
■ अपने पैसे का हिसाब खुद रखें। आपका वित्तीय भविष्य आपकी जिम्मेदारी है। यह आपके पिता या पति की जिम्मेदारी नहीं है। आपने कमाया है तो उसे आप ही संभालें। खुद मेहनत करें। अपनी पे-स्लिप, टैक्स और निवेश को समझें। खुद फैसले करें। सबसे जरूरी चीज है कॉन्फिडेंस।

■ कमाने की अपनी क्षमता बढ़ाएं। आपका वेतन वेल्थ बनाने का आपका सबसे बड़ा जरिया है। इसलिए खुद को बेहतर करने में लगातार निवेश करते रहें। नई स्किल्स सीखें। सर्टिफिकेशन हासिल करें। अपना वेतन बढ़ाने के लिए बातचीत करें। ज्यादा कमा सकने की आपकी क्षमता आपकी सबसे बड़ी संपत्ति है। इसे यूं ही बेकार न पड़ा रहने दें।

■ अपने अनुशासन को एक लय दें। आपमें संकल्प शक्ति है, यह अच्छी बात है। यह एक मजबूत आधार है। लेकिन ऐसा करें कि जिस दिन सैलरी आपके अकाउंट में आए, आपके इनवेस्टमेंट्स खुद ब खुद वहां से तय जगहों पर चले जाएं। SIP सेट करें और लंबे समय के लिए उन्हें भूल जाएं।

Q गृहिणियां सेविंग्स और इनवेस्टमेंट में किन 3 खास पहलुओं पर फोकस करें?
■ जो भी आपके पास है, उससे शुरुआत करें। घर के बजट से अगर आपने 500 रुपये बचाए हैं, तो उसी से शुरुआत करें। रकम महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण है आदत। शुरुआत करने और चीजों को अपने नियंत्रण में लेने से आगे की मजबूत राह बनती है। अपने नाम से बैंक खाता खोलें और वहां से पैसा भेजें।

■ रुपये-पैसे की समझ बढ़ाने में मेहनत करें। किसी भी शेयर या म्यूचुअल फंड में निवेश करने से पहले अपनी नॉलेज में इनवेस्ट करें। आपको विशेषज्ञ बनने की जरूरत नहीं है, लेकिन यह समझना जरूरी है कि महंगाई, कंपाउंडिंग और रिस्क जैसी चीजों का क्या मतलब है।

■ रुपये-पैसे की दुनिया में एक बार को आपको उलझन हो सकती है, डर लग सकता है। महिला सलाहकार तलाशें, कोई 'MF दीदी', जो आपकी बातों को समझ सकें और आपके समझने लायक जुबान में अपनी बात कहें। महिलाएं महिलाओं से कुछ अलग तरह से कनेक्ट करती हैं। वे आपको सेफ स्पेस देती हैं।

मधु लुनावत
फाउंडर, द वेल्थ कंपनी

पर्सनल से सवाल, सबके काम के जवाब

1 ऐसी आदत, जिस पर आपका सबसे ज्यादा जोर हो?
निवेश के मामलों में हमेशा अपने भरोसेमंद एडवाइजर/डिस्ट्रिब्यूटर से सलाह लेना।

2 एक बात, जिसकी सलाह आप सबको देती हैं, पर उस पर खुद पूरा अमल नहीं किया?
प्रॉपर असेट अलोकेशन। हालांकि मेरा पूरा पैसा AIF और MF में है।

3 अगर किसी एक वित्तीय शब्दावली को हमेशा के लिए हटाना हो, किसे हटाएंगी?
'प्लेइंग द मार्केट।' यह ऐसा शब्द है, जिससे लगता है कि इनवेस्टमेंट किसी कसीनो या गेम ऑफ चांस का मामला है। वेल्थ क्रिएशन बहुत अनुशासित और लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है। आप किसी बिजनेस का एक हिस्सा खरीदते हैं और उसकी ग्रोथ में भागीदार बनते हैं। 'प्ले' शब्द उस कड़ी मेहनत और धीरज को हल्का बताता है।

4 निवेश के बारे में सबसे बेतुकी सलाह, जो आपके सामने आई हो?
यह सलाह कि 'इस बार मार्केट अलग है। यह शेयर 3 महीनों में डबल हो जाएगा।' दरअसल यह सलाह नहीं, जुआ है। यह रिसर्च, फंडामेंटल्स और डिसिप्लन को पूरी तरह नजरंदाज करने की बात है। निवेश के बारे में जो सबसे खतरनाक सलाह होती है, वह हमेशा फटाफट और बिना मेहनत के मोटा रिटर्न मिलने की चाशनी में लपेटकर दी जाती है।

5 ऐसा लग्जरी खर्च, जिससे खुद को रोकना मुश्किल हो?
लग्जरी कारें।